Ashish kumar Thakur
B.A. II, History(H), paper-II
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur

[अकबर के साम्राज्य विस्तार]
[विजय अभियान]

1) मालवा विजय :- (1561) सत्ता सम्भालने के बाद अधम खां के नेतृत्व में मुगल सेना ने मालवा नरेश बाज बहादुर को परास्त किया।

विजय के दौरान बाज बहादुर की रानी 'रुपमति' ने आत्म हत्या कर लिया। खम्स की सम्पत्ति ठीक से ना भेजने के कारण अकबर अधम खां को दण्ड देने के लिए मालवा जा पहुँचा, परन्तु माहम अनगा की प्रार्थना पर उसे छोड़ दिया गया।
लगभग 15 वर्ष तक दक्षिण में भटकने के बाद बाज-बहादुर ने अकबर के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया, जहाँ उसे 1000 का मनसबदार बनाया गया।
बाज बहादुर अपने समय के श्रेष्ठ संगीतो में गिना जाता था।

2) मेड़ता विजय (1562) :- यहाँ मुगल ने जयमल को पराजित किया था।

3) गोड़वाना विजय [1564] :- यहाँ के शासक वीर नारायण था, जो नाबालिग थे अत: उसकी मां दुर्गावती संरक्षिका थी। आसफ खां के नेतृत्व में दुर्गावती को परास्त किया गया।

4.) मेवाड़ विजय [1567-68] :- 1567-68 में मेवाड़ पर राणा उदय सिंह का शासन था। मेवाड़, दिल्ली और अरब सागर के बीच के संचार मार्गो पर स्थित होने के कारण काफी महत्वपूर्ण था। मुगल युद्ध के पूर्व ही उदय सिंह ने किला छोड़ दिया और किले की रक्षा का भार जयमल और फत्ता को दिया गया।
1568 ई० मे जैमल एंव फत्ता सिंह वीरता पूर्वक लड़ते हुए मारे गए। इस अभियान मे करीब 30 हजार राजपुतों की हत्या की गई। यह युद्ध अकबर पर एक धब्बा जैसे था क्योकि माना जाता है कि अकबर ने नरसंहार का आदेश दे दिया था, प्रत्येक राजपूत घर मे शव था।
अकबर जैमल एंव फत्ता की वीरता से काफी प्रभावित हुआ तथा आगरा की किले की मुख्य द्वार पर हाथी पर सवार इन दोनों वीर की प्रतिमा स्थापित करवाई।
चितौड़ किलो मे अकबर 'मधुकर नामक शाही हाथी' पर बैठकर प्रवेश किया और फतहनामा जारी किया था।

Ashish

अपने प्रण के अनुसार इस युद्ध के बाद अकबर ने ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती के दरबार में पैदल यात्रा की थी। परन्तु मेवाड़ का किला जीतने के बाद भी मुगलों के पहाड़ी इलाके का नियंत्रण नहीं प्राप्त हुआ।

3 March 1572 को उदयसिंह का उत्तराधिकारी महाराणा प्रताप बना, जिसने कुमलगढ़ को अपनी राजधानी बनाया और मुगलों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा।

हल्दीघाटी का युद्ध (1576) :- 1576 ई० में इस युद्ध का वर्णन बदायूँ ने किया था, जिसने मुगल सेनानायक के रूप में युद्ध में भाग लिया था।

इसमें मुगल सेना का नेतृत्व राजा मानसिंह कर रहा था युद्ध के दौरान महाराणा प्रताप बुरी तरह घायल हो गए और पराजित हुआ। परन्तु पूर्ण रूप से मुगलों को भी विजय प्राप्त नहीं हुई।

1578 ई० में मानसिंह ने कुमलगढ़ को जीत लिया। पुनः 1594 ई० में शाहजादा सलीम और मानसिंह को मेवाड़ के अभियान पर भेजा गया परन्तु दोनों मुगल सेनापतियों के बीच मतभेद के कारण अभियान असफल रहा।

1597 ई० में महाराणा प्रताप की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी अमर सिंह हुआ, जिसने मुगल के विरुद्ध युद्ध जारी रखा।

5) रणथम्भौर विजय [1569 ई०] :- यहाँ पर हाड़ा राजपूत सुरजनराय का शासन था, जो पराजित होने के बाद शाही सेवा स्वीकार कर ली थी।

6) कालिंजर [1569 ई०] :- कालिंजर/बुन्देलखण्ड यहाँ के शासक रामचन्द्र को मजनू खाँ के नेतृत्व में मुगलों ने हराया।

Note:- तानसेन, रामचन्द्र के दरबार में रहते थे।

7.) गुजरात विजय [1572-73 ई०] :- यह विजय अकबर का सबसे महत्वाकांक्षी अभियान था। इस अभियान के दौरान अकबर ने पहली बार समुद्र देखा था। इसी समय आगरा के निकट शेख सलीम चिश्ती के जन्म स्थान शिकरी शहर के रूप में विकसित किया, जिसे गुजरात विजय के बाद 'फतेहपुर सिकरी' कहा गया।

Scanned with CamScanner